# क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

**संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति**
**संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्**


मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo



बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :


क्रियायोग ध्यान के द्वारा अन्तःकरण में शास्त्रों के वास्तविक ज्ञान का अवतरण

## काम तत्व पर नियंत्रण से सम्पूर्ण समस्याओं का निदान संभव
## - स्वामी श्री योगी सत्यम् जी

19 फरवरी 2013 इलाहाबाद । महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग सत्संग शिविर के भव्य पण्डाल में आयोजित क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यक्रम में अन्तर्राष्ट्रीय संत क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने ''काम तत्व'' की अनिवार्यता और उसके नियंत्रण पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला । स्वामी जी ने कहा कि शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की अनुभूति और उस अनुभूति के द्वारा प्रकट होने वाली स्मृति ही काम है । उदा के लिए- मन जिह्वा इन्द्रिय के द्वारा खट्टेपन की अनुभूति किया। खट्टेपन की अनुभूति और उसकी स्मृति काम है । शरीर के दृश्य रूप को बनाये रखने के लिए शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की अनुभूति और उसकी स्मृति का बना रहना परम आवश्यक है । अगर आँखों से दृश्य की अनुभूति, कान से श्रवण, त्वचा से स्पर्श, जिह्वा से स्वाद और नाक से गंध की अनुभूति न हो और इस अनुभूति की सम्पूर्ण स्मृतियों का लोप हो जाय तो शरीर का दृश्य रूप नहीं रहेगा । इस प्रकार काम शरीर के दृश्य रूप को बनाये रखने के लिए अनिवार्य शक्ति है परन्तु इसका नियंत्रण भी परम आवश्यक है । शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की स्मृतियाँ जब मन को नियंत्रित करने लगती हैं उस समय मनुष्य के अंदर देवत्व सुषुप्त होने लगता है और अनेक प्रकार के विकारों का जन्म होता है । काम को सद्भावना और सद्विचार द्वारा सजन और नियंत्रित करने पर साधक के अंदर सम्पूर्ण दैवीय शक्तियाँ प्रकाशित होने लगती हैं

और हर प्रकार की दैहिक, दैविक, भौतिक समस्याओं का लोप हो जाता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि काम को अच्छी तरह से समझने के लिए महाभारत को अच्छी तरह समझना बहुत आवश्यक है । अपने अंदर अतीत का दर्शन कराते हुए स्वामी जी ने महाभारत काल में वर्णित समस्त पात्र और उस समय घटित होने वाली घटनाओं के आध्यात्मिक स्वरूप को स्पष्ट किया। स्वामी जी ने कहा कि महाभारत काल में वर्णित धृतराष्ट्र अपने अंदर अंधा मन और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध रूपी इन्द्रियाँ गान्धारी के समरूप हैं । जिस प्रकार धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे उसी प्रकार अपने अंदर मन अंधा है । गान्धारी ने आँखों पर पट्टी बाँध ली थीं, उसी प्रकार इन्द्रियाँ भी अंधवत कार्य करती हैं । काम शक्ति महाभारत काल में वर्णित दुर्योधन की शक्ति है । मन और इन्द्रियों से संयोग से प्रकट होने वाली प्रथम अनुभूति ही काम है । शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की अनुभूति और स्मृति जब मन को नियंत्रित करने लगती हैं और मनुष्य उसके अधीन होने लगता है, ऐसी अवस्था में अज्ञानता प्रकट होती है । यही धृतराष्ट्र का दुर्योधन के वश में होना है जिससे सम्पूर्ण समस्याओं का जन्म होता है ।

काम तत्व के नियंत्रण पर प्रकाश डालते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग के अभ्यास से सद्भावना और सद्विचार से काम तत्व का सृजन, संरक्षण व आवश्यकतानुसार रूपान्तरण किया जाता है । काम तत्व पर नियंत्रण स्थापित होने पर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की कोई भी अनुभूति और स्मति मन को वश में नहीं कर पाती है । क्रियायोग की गहन साधना से शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की अनुभूति को प्राण तत्व पर नियंत्रण के द्वारा इच्छाशक्ति से प्रकट और अदृश्य करने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है जिससे काम पर पूर्ण विजय प्राप्त हो जाता है । इसी को निर्विकल्प समाधि की अवस्था कहा गया है जिसमें स्थित होने पर पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है ।

कियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

- योगमाता